भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

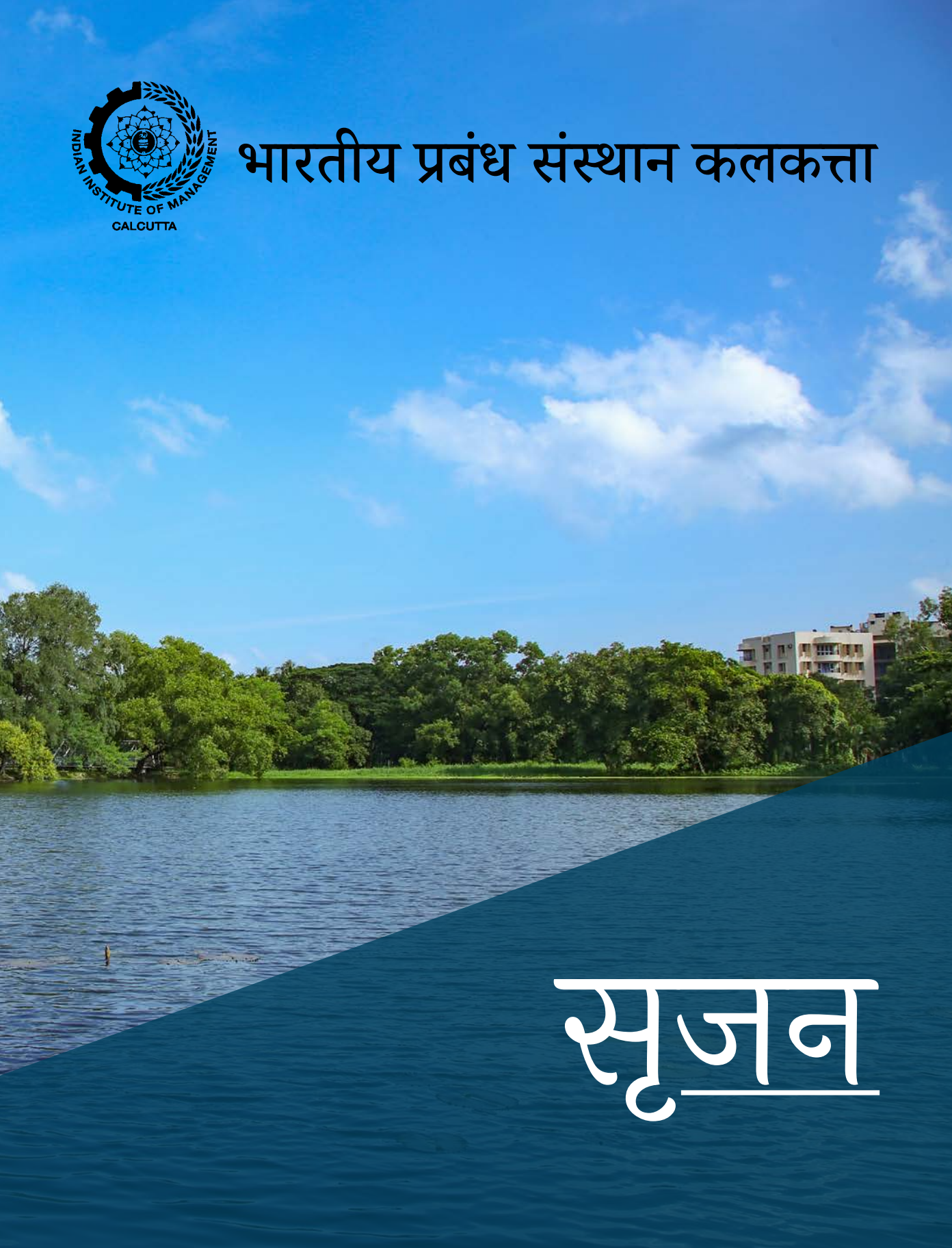

सृजन

सृजन

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की वार्षिक राजभाषा पत्रिका वर्ष 2022-23

प्रो. उत्तम कुमार सरकार
निदेशक

लेफ्टिनेंट कर्नल (सेवानिवृत्त) आलोक चन्द्रा
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

श्री अरुणाभ दास
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन)

सलाहकार समिति

डॉ. नारायण चंद्र घोष
पुस्तकालयाध्यक्ष एवं अध्यक्ष समिति

श्री आलोक गुइन
जनसंपर्क अधिकारी

श्री विजय सिंह विराट
वित्त और लेखा अधिकारी

श्री शिलादित्य सेनबराट
प्रधान, सी.एम.डी.पी.

श्री जुल्फकार हसन
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

श्रीमती सुनीता तिवारी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव

संपादक

श्रीमती सुनीता तिवारी
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सृजन

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता - 700104

निदेशक की कलम से...

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता में 15 सितंबर, 2023 को राजभाषा पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर हमारी संस्थान की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "सृजन" 2023 के सफल प्रकाशन से मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रति यह "सृजन" नामक पत्रिका हमारा छोटा सा उपहार है।

राजभाषा हिंदी एक ऐसी सशक्त और लोकप्रिय भाषा है जो देश के कोने-कोने में बोली व समझी जाती है। इस भाषा की प्रचार-प्रसार और प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में कार्यान्वयन हेतु हमारे संस्थान में आवश्यक कदम उठाए गए है। वार्षिक कार्यक्रम में उल्लेखित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जांच बिंदुओं की स्थापना की गई हैं एवं सभी स्तर के अधिकारियों की जिम्मेदारियां सुनिश्चित की गई हैं। परिणामस्वरूप हिंदी पत्राचार में वृद्धि हुई है।

हमारे संस्थान में राजभाषा विभाग द्वारा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण आदि प्रदान कर हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि "सृजन" के माध्यम से हिंदी के प्रति जागृति पैदा होती रहेगी और पत्रिका अपनी वांछनीय भूमिका निभाती रहेगी। इसके माध्यम से भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता में भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति निरंतर सक्रियता रही है।

इस वर्ष पहली बार "सृजन" में कई रचनाएं प्रकाशित हुई है, जो संस्थान के कार्मिकों की भाषागत एवं साहित्यिक रुचियों के परिचायक हैं। "सृजन" निरंतर समृद्ध होती रहे और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करती रहे, यही कामना है। इस सुंदर पत्रिका के प्रकाशन हेतु मैं सभी सहकर्मियों को बधाई देता हूँ।

उत्तम कुमार सरकार

(प्रो. उत्तम कुमार सरकार)
निदेशक
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

संदेश

यह गौरव एवं प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "सृजन" का प्रकाशन होने जा रहा है।

राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए राजभाषा हिंदी की अहम भूमिका है। पत्रिकाएं राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में उचित माहौल तैयार करते हुए प्रचार-प्रसार का एक प्रभावी माध्यम बन जाती है। अन्य महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों के साथ-साथ सरकार की राजभाषा नीति और उसके कार्यान्वयन के बारे में जानना हम सबके लिए अत्यंत आवश्यक है। बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक होने से समावेश का भाव पैदा होता है। "सृजन" नामक हमारी पत्रिका देश की भाषिक समृद्धि और भाषाई रचनाशीलता का अभिनव मंच बन सकेगी ऐसी उम्मीद है। साथ ही यह पत्रिका अनेकता में एकता के भारतीय आदर्श की भी अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनने की आकांक्षी है। "सृजन" पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक सार्थक प्रयास है जो निःसंदेह हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति प्रदान करेगा।

"सृजन" के लेखन, संपादन तथा प्रकाशन की प्रक्रिया से जुड़े समस्त सदस्यों, रचनाकारों एवं सहयोगियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं तथा पत्रिका के प्रतिवर्ष अनवरत रूप प्रकाशन की कामना करता हूँ।

आलोक चन्द्रा

(आलोक चन्द्रा)
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

मेरा अनुभव...

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा अपनी हिंदी पत्रिका “सृजन” प्रकाशित करना एक उल्लेखनीय प्रयास है। हिंदी अनुभाग हमेशा संस्थान की सभी गतिविधियों, मुख्य रूप से प्रशासनिक गतिविधियों, जिसमें टिप्पण, प्रारूपण और बाहरी और आंतरिक पत्राचार शामिल हैं, हम लोग हिंदी को एक आधिकारिक भाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए हमारा सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे है। अनुभाग कार्यशालाएं, प्रशिक्षण, आमंत्रित वार्ता आदि भी आयोजित करता है। वे प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में “राजभाषा पखवाड़ा” भी मनाते हैं।

सलाहकार समिति का अध्यक्ष होने के नाते, मुझे यह अवसर पाकर और हिंदी पत्रिका “सृजन” के पहले वार्षिक अंक के प्रकाशन में अपना सहयोग देने पर गर्व महसूस हो रहा है। यह वार्षिक गतिविधियों पर एक विहंगम दृष्टि देता है और कर्मचारियों के बीच साहित्यिक दक्षताओं को व्यक्त करने के लिए हिंदी को बढ़ावा देता है।

मुझे विश्वास है कि “सृजन” भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता और बाहरी दुनिया के सदस्यों के बीच उनके समर्थन और साहित्यिक योगदान के साथ अपने प्रभाव को और मजबूत करेगा।

अंत में, मैं इस खंड पत्रिका को प्रकाशित करने में उनके अथक सहयोग के लिए समिति के सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

(डॉ. नारायण चंद्र घोष)
सलाहकार समिति अध्यक्ष एवं पुस्तकालयाध्यक्ष
बी.सी. रॉय स्मारक पुस्तकालय
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

धन्यवाद ज्ञापन...

यह अत्यंत ही सम्मान, सौभाग्य, प्रसन्नता एवं उत्साह का विषय है कि भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की ओर से वार्षिक राजभाषा पत्रिका “सृजन” के प्रकाशन का शुभारंभ होने जा रहा है। राजभाषा के प्रचार, प्रसार, प्रगामी प्रयोग एवं प्रगति की दिशा में यह हमारा एक नूतन प्रयास है।

इस प्रयत्न को सार्थक, सफल, समृद्ध एवं सृजनात्मक बनाने के लिए हम सभी पूर्णतया समर्पित हैं। सृजनात्मक लेखनी न सिर्फ़ सामाजिक संवेदनाओं को उजागर करती है, अपितु राष्ट्रीय दायित्व के निर्वहन में भी सार्थक योगदान देती है। राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यान्वयन के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए “सृजन” का प्रकाशन नि:संदेह भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता के गौरव एवं गरिमा को अक्षुण्ण रखने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

“सृजन” के लेखन, संपादन, प्रकाशन की प्रक्रिया से जुड़े सभी सदस्यों, रचनाकारों एवं सहयोगियों के प्रति आंतरिक आभार एवं हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं “सृजन” पत्रिका की निरंतर अभिवृद्धि की कामना करता हूँ।

(अरुणाभ दास)
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन)
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

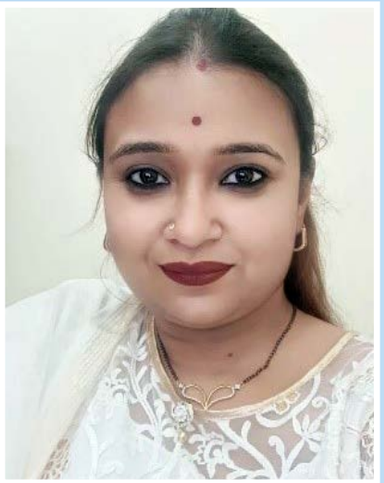

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

हमें आपके समक्ष भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता के राजभाषा विभाग की पत्रिका “सृजन” का पहला संस्करण प्रस्तुत करते हुए विपुल खुशी की अनुभूति हो रही है। जैसे ही हम इस नई यात्रा पर आगे बढ़ रहे हैं, हमारा लक्ष्य रचनात्मकता, अभिव्यक्ति और ज्ञान-साझाकरण के लिए एक मंच को बढ़ावा देना है।

“सृजन” हमारे समुदाय के भीतर विविध प्रतिभाओं और दृष्टिकोणों का सजीव प्रतिबिंब है। इस पत्रिका के माध्यम से हम भाषा, साहित्य की सुंदरता, संचार की शक्ति, एवं राजभाषा के प्रति मनोवेग का जश्न मनाने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा प्रयास एक ऐसा स्थान प्रदान करना है जहां विचार स्वतंत्र रूप से प्रवाहित हो सकें, जिससे विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के बारे में हमारी समझ और सराहना समृद्ध हो।

प्रत्येक अंक में, आप असंख्य लेखों, कविताओं, कहानियों और व्यावहारिक अंशों की उम्मीद कर सकते हैं जो भाषा के विभिन्न पहलुओं और आज की वैश्वीकृत दुनिया में इसके महत्व पर प्रकाश डालते हैं। भाषाई विविधता की खोज से लेकर अन्वेषण और भाषा सीखने की तकनीकों पर चर्चा करने तक, “सृजन” का उद्देश्य आपके हृदय और मस्तिष्क को मोहित करना है। यह पत्रिका आपकी रचनात्मक गुणों की क्षमता को बढ़ाएगा और आपकी छिपी प्रतिभा को निखारने मे सम्पूर्ण सहयोग देगा।

हम उन योगदानकर्ताओं, संकाय और कर्मचारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने इस पत्रिका को जीवंत बनाने में हमारा दिली समर्थन किया है। हमें उम्मीद है कि “सृजन” एक ऐसा मंच बन जाएगा जो बौद्धिक जिज्ञासा को बढ़ावा देगा और भाषा और समाज पर इसके प्रभाव की गहरी समझ को प्रोत्साहित करेगा।

निदेशक प्रो. उत्तम कुमार सरकार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री. आलोक चन्द्रा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) श्री. अरुणाभ दास, पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. नारायण चंद्र घोष और समिति के अन्य सदस्यों ने इस पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए पूरे दिल से समर्थन दिया।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम आपकी प्रतिक्रिया, बहुमूल्य सुझावों और क्रियात्मक योगदान का स्वागत करेंगे। “सृजन” एक सामूहिक प्रयास है, और आपकी सक्रिय भागीदारी इसकी निरंतर सफलता की कुंजी होगी।

हमारे साथ इस यात्रा का हिस्सा बनने के लिए हार्दिक धन्यवाद। हम आशा रखते हैं कि आपको “सृजन” पढ़ने में उतना ही आनंद आएगा जितना हमें इसे बनाने में आया है।

अब विलंब किस बात की? ज्ञान और कुशलता के इस नदी में उद्दोगी डुबकी लगाएँ और सुभिन्न हर्ष का स्वामित्व प्राप्त करें।

सुनीता तिवारी

(सुनीता तिवारी)
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	लेखक/रचनाकार	लेख/रचना	पृष्ठ संख्या
1	श्री अमृतेश सिन्हा	नई सोच नई राह	01
2	सुश्री अनिंदिता रुद्र	इंटरव्यू	03
3	श्री अनिल कुमार श्रीवासत्व	अतीत की परछाइयां	07
4	श्री अरुणाभ दास	मेरा संदकफू भ्रमण	11
5	श्रीमती मधुश्री देबनाथ	नारीवाद और माँ	13
6	श्री महेश पटनायक	चाखी खुंटिया: पुरी के योद्धा पुजारी	15
7	श्रीमती मानसी सान्याल	10 दिन का एकांत	16
8	श्रीमती पियाली चक्रबर्ती	फूलों से नित हंसना सीखो	19
9	श्रीमती प्रदीप्ता रॉय	वक्त बदल रहा है	21
10	सुश्री शुभ्रा धर	डर से करो मुकाबला	23
11	श्री सत्य नारायण घोष	विकास भारत में हिंदी का महत्व	25
12	श्रीमती सुनीता तिवारी	राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के संबंध में आदर्श कार्यालय की विशेषताएं	27
13	श्री सुनील कुमार श्रीवास्तव	मुक्तिबोध	29
14	श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधरी	पिता	31

नई सोच नई राह

अमृतेश सिन्हा

होनी चाहिए हर एक मनुष्य की चाह,
जिससे हर मंज़िल को मिले एक नई राह ।
हाथ पर हाथ धरे बैठना भी है एक गुनाह,
सदैव अपनाए एक नई सोच एक नई राह ।।

चलो मिलकर हम नई दुनिया सजाएँ,
नई सोच से सुसज्जित एक नई राह बनाए,
ऊँचे पर्वतों जैसी बाधाओं से कभी ना घबराएँ,
जहाँ तलक जाए निगाहें हम आगे ही बढ़ते जाएँ ।

लक्ष्य प्राप्ति में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आए,
जोश हो इतना कि पल भर भी निराशा हम पर न छाए,
अपने ही दम पर सदैव हम आगे ही आगे बढ़ते जाएँ,
क्या फर्क पड़ता हमें, कोई साथ आए या न साथ निभाए ।

कर्मवीर हैं हम, कर्मपथ पर अकेले निरंतर बढ़ते ही जाएँ,
सफलता है जिसका लक्ष्य, वह भला समय व्यर्थ क्यों गँवाए ।
निकल पड़ते हैं कर्मपथ पर भले ही आकाश में काली घटा छाए,
आलस्य को छोड़ उत्साही हम, परिश्रम को अपना मित्र बनाए ।।

दुनिया को प्रेम और सद्भावना से हम सजाएँ,
आत्मबल से मानव को सफलता की नई ऊँचाई दिखाएँ,
आओ हम सब मिलकर नई सोच नई राह बनाएँ।
इस बहुमूल्य जीवन का हर एक पल सार्थक बनाएँ ।।

मार्ग दर्शक एवम प्रेरणा वरदक: श्रीमती गंगा सिन्हा

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के उदघाटन समारोह में संस्थान के निदेशक महोदय प्रोफेसर उत्तम कुमार सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश चंद्र मिश्रा को फूलों के गुलदस्ता देकर स्वागत कर रहे हैं। जहां संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी महोदय श्री आलोक चन्द्रा एवं उनके साथ खड़े संस्थान के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) महोदय श्री अरुणाभ दास भी उपस्थित है।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान संस्थान के निदेशक प्रो. उत्तम कुमार सरकार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश चंद्र मिश्रा, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक चन्द्रा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) श्री अरुणाभ दास एवं सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) श्रीमती सुनीता तिवारी द्वारा दीप प्रज्वलन।

ऑफिस पहुँचते ही खेल संपादक सुरजीतदा मुझे अपने कमरे में बुलाया। हमे देखकर राहत की सांस ली और कहा, “तुम्हें सुबह से ढूंढ रहा हूँ। अचिंत्य भी कैमरा लेकर कब से बैठा है। और देर ना किए हुए जल्दी निकलो ऑफिस से। गौरव सेन के साथ एप्पोइंटमेंट किया है। तुम्हारा असाइन्मंट यही है की तुम्हे गौरव सेन का एक सचित्र इंटरव्यू लेना है। गौरव,आज शम की फ्लाइट से दिल्ली जा रहा है। यह लो॥ उनका पता”- बोलकर एक छोटी सी कागज़ की चिट मेरे हाथ मे दे दिया।

इस असाइन्मंट के लिए मै कब से इंतज़ार कर रहा था। वेस्टइंडीस सफ़र के लिए गौरव सेन सिलैक्ट हुआ है, यह ख़बर कल शाम सब को पता चला है। खुशी की ख़बर, बहुत दिन बाद एक बंगाली क्रिकेटर को विदेश सफ़र के लिए चुना जा चुका है। हम सब स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट्स इस चुनाव के बारे में निःसंदेह थे। पिछले तीन चार सीज़न से गौरव की जो बल्लेबाजी का प्रदर्शन था, उसे टीम से बाहर रखना कठिन होता।

कॉलिंग-बेल बजाते ही गौरव ने ख़ुद दरवाजा खोला। छह फुट लंबा, बनाया हुया चेहरा, धूप में जलके पीतल वर्ण, सादर आह्वान किया- “Welcome मैं आप ही का इंतजार कर रहा हूँ। सुरजीतदा ने सुबह फोन किया था। उसे हम ना नहीं कहे सके। साक्षात्कार सुनके ही मैं कितना डर जाता हूं। कठिन से कठिन प्रश्न पूछेंगे आप – इस से फ्रेंडली बातचीत करे तो अच्छा।”

मैंने टेप लिया और उसे चलाया। गौरव ने कहना शुरू किया, उन्हें क्रिकेट की प्रति आकर्षण कैसे हुया, कौन और कैसे उन्हे प्रोत्साहित किया, जब दिल टूट गया तब कैसे लड़कर संकट का सामना किया। उनके बातों की बीच में एक दो प्रश्न डालने लगा । ‘क्यों उन्हे spin ball से ज़्यादा pace ball पसंद है? जहां हमारे ज़्यादातर बल्लेबाज़ों को spin पसंद है।’

उन्होंने जवाब दिया, “जब मैं बच्चा था तब से मुझे pace पसंद है। pace का मतलब गति और गति या रफ्तार से मुझे थ्रिल आता है। More the speed, better I perform !”

“Right। वर्तमान में पेस के खिलाफ इतने अच्छे खेलते हुए किसिको देखा नहीं गया। आप तो कई दिनोसे खेल रहे है। बहुत सारे bowlers के विरुद्ध batting किया है।इनमे से आप के ख़याल में सबसे तेजी कौन है?”

वह थोड़ी देर चुप रहा और बोला “श्रीधर हाज़रा।”

श्रीधर हाज़रा नाम का कोई खिलारी के बारे में कभी नहीं सुना, खेल देखना तो दूर की बात है।

जैसे ही में यह बोला, गौरव ने कहा, सिर्फ़ तुम क्यों हो? किसी ने भी श्रीधर के बारे में नहीं सुना और खेल नहीं देखा। लेकिन उसका नाम सबके ज़ुबान पर होनी चाहिए। उसका खेल देखने के लिए मैदान मे लोगों का भीर उमड़ना चाहिए। आपको एक तस्वीर दिखाता हूँ।

दीवार पर लटका हुआ है खिलारी जीवन की बहुत सारी तस्वीरें। कही अलग-अलग भंगिमा में लिया गया कुछ ग्रुप फ़ोटो और बड़े बड़े खिलाड़ियों के साथ ली गई कुछ तस्वीरें। एक तस्वीर की ओर इशारा करते हुये गौरव ने कहा, "इस तस्वीर को अच्छे से देखिए।"

गौरव के साथ एक 18 या 19 वर्षीय लड़का। कद लगभग गौरव के समान, बांस की ईख की तरह पतला। उन्होंने पजामा और हाफ शर्ट पहनी थी। देखते ही समझ आता है की लड़का एक गरीब मध्यम वर्गीय परिवार से है और पोषण की कमी साफ नजर आता है।

“यही श्रीधर हाज़रा है, मेरा देखा हुआ सब से बहतर फास्ट बोलर। वेस्टइंडीज के बोलर्स को पंगे देने की क्षमता रखता था यह लड़का।”

“अब यह नहीं खेलते? मर गए हैं क्या?”

“नहीं, नहीं, वह जीवित है। लेकिन वे नहीं खेल सकते।”

“ज़रा खोल के बताइए ना। इंट्रेस्टिंग होने से कागज़ मे छाप सकते है।”

सुनते ही गौरव का चेहरा खिल उठा। “प्रिंट? यह तो बढ़िया है! देश की जनता को पता चले, कितनी बड़ी संभावना जड़ों में नष्ट हो गई थी।”

“सुनो,” गौरव ने शुरू किया, “यह लगभग चार साल पहले की बात है, मेरे चचेरे भाई की शादी में मेरे चाचा का पैतृक घर, बांकुरा के एक छोटे से शहर में गए थे। तब में नियमित रूप से राँझी, दुलीप ट्रॉफी, खेलता था, कुछ विदेशी टीमों के विरुद्ध भी खेल चुके है। मेरे भाईयों को मुझपर बड़ा गर्व था। शादी खत्म होते ही वे मुझे अपने क्लब में ले गए। जाकर देखा वहाँ क्रिकेट का अभ्यास चल रहा था। हमे देखते ही सब क्रिकेट छोडकर मुझे घेर लिया। मैंने कहा, चलो, मेरे साथ थोड़ा खेलो। यह सुनकर सब बहुत खुश हुये। मैं बल्ला लेकर विकेट के सामने खड़ा हो गया । उनमें से पांच लड़को ने गेंदबाजी करने के लिए आगे आया । साधारण, आसान गेंद, खेल कर कोई मजा नहीं आया। अंत में, नाराज होकर, मैंने कहा, “यह तुम्हारा बोलिंग है? क्या कोई कड़ी गेंदबाजी नहीं कर सकता?”

एक ने कहा, “श्रीधर बहुत तेज़ गेंदबाजी करता है।”

मैंने कहा, “फिर उसे गेंदबाजी करने के लिए कहो।”

“देखते हैं कि वह घर पर है की नहीं” लड़के ने कहा।

उसने साइकिल ली और गायब हो गया। थोड़ी देर बाद उसे अपनी साइकिल पर जिसको बैठा कर ले आया,समझा यही श्रीधर है।

उसने आकर अपना पजामा फ़ोल्ड कर के गेंदबाजी के लिए तैयार हो गया। कुछ गेंद खेलने के बाद मैंने श्रीधर से कहा, “यह तुम्हारा तेज़ बोलिंग? कोलकाता महिला क्रिकेटर गेंदबाज भी इससे ज्यादा कड़ी गेंदबाजी करती हैं।”

“अपने पैड नहीं पहने है, मैं धीमी गेंदबाजी कर रहा था, अगर आप को लग जाते तो? अभी ज़ोर से करें?”

“हाँ, करो।” मैंने अपना स्थान लिया।

अब श्रीधर कम से कम बीस कदम की दूरी से सांप की तरह दौर कर balling करना शुरू किया।

पहली गेंद किस तरफ गया, मुझे पता ही नहीं चला। दूसरी गेंद मे उसने सीधा मिड-स्टंप उड़ा दिया।

चौथा में कैच उठा लेकिन पकड़ ने की लिए कोई फील्डर नहीं था, इस लिए बच गया।

तब तक मेरे सिर पर खून सवार हो चुका था। एक सामान्य देहाती लड़के के हाथों इतना परेशान होने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। ठीक है, मैं भी गौरव सेन हूं, अगली गेंद सीधे बाउंड्री के बाहर भेज दिया मैने।

श्रीधर ने अपने रन-अप को बीस कदम से बढ़ाकर पच्चीस कर दिया। उसकी अगली गेंद कान के पास से सिटी देते हुए निकल गई। एक भी गेंद को मैं कनेक्ट नहीं कर सका। फिर एक गेंद सीधे मेरे मुह पर आकर लगा, मैं मैदान पर पलटकर गिर पड़ा।

कुछ घंटो के बाद चेतना आने से सुना की काफि सारे stitch लगा है होंट पर; मुह सूज गया था और असहनीय दर्द महसूस होने लगा था।

कुछ दिनों मे ठीक होने के बाद कोलकाता लौटने से पहले मैंने श्रीधर कोबुलाकर कहा था , “शाबाश ! तुम इस यात्रा तो जीत गये। शानदार गेंदबाजी की! लेकिन मैं वापस आऊंगा।एक बार फिर तुमसे मुकाबला करूंगा।”

उसने अपना चेहरा नीचे किया और मुस्कुराया। मैंने दोहराया,“जब मैं फिर से आऊंगा, तो तुम्हें कोलकाता ले जाऊंगा।”

मैंने अपने चचेरे भाई से कहा, “श्रीधर के साथ एक फोटो लेना। यह वही तस्वीर है।”

“फिर क्या हुआ? अगली बार कौन जीता?” – में अब तक एकाग्रचित्त होकर उनकी कहानी सुन रहा था।

“छह महीने बाद फिर से मैं, चाचा के घर गया । चचेरे भाई हॉस्टल में था। इसलिए अकेले ही उनके क्लब मे गया ।श्रीधर मैदान के किनारे बैठकर खेल देख रहे था। “मैं फिर से आया हूं, आओ देखें की तुम कितनी ज़ोर से balling कर सकते हो।लेकिन इस बार, मैं पैड और दस्ताने के साथ खेलूंगा।”

श्रीधर खड़ा हो गया, और धीरे से अपने शरीर से चादर हटा दिया।

“हे भगवान !! मैंने अपनी आंखे तुरंत बंध कर लिया..उसका दाहिना हाथ उसकी कोहनी से कटा हुया था। एक सड़क दुर्घटना में श्रीधर का यह हाल हुआ।”

कुछ देर हम सब चुप कर बैठे रहे। फिर में उठ कर कहा, “भूल जाइए इस बात को, मन खराब कर के क्या होगा, अपने आगे के tour के बारे मे सोचिए। Wish you every success on your tour।”

“उपाय नहीं, श्रीधर को मै ज़िंदगी भर भूल नहीं पाऊँगा।“यह कहकर अपने मुह के भितर से तीन दांत का एक सेट निकालकर उन्होने हमे दिखाया। “यह तीन दाँतो के लिए –श्रीधर का जो गेंद हमे धराशायी किया, यह उसीका जीता जागता प्रमाण है।”

::::::::::::::::::::::::::::::::::::

उमंग और उत्साह के साथ संस्थान में मनाई गयी राजभाषा पखवाड़ा 2022 की कुछ उज्ज्वल झलकियाँ

अतीत की परछाइयां

अनिल कुमार श्रीवास्तव

दस वर्ष की आयु मे पिता का साया सिर से उठने तथा 6 बच्चों को पालने के लिए एक माँ की जद्दोजहद को रग-रग से महसूस करते हुए अनिल ने अपने बाल्यावस्था को पार कर किशोरावस्था मे कदम रखा था। सभी भाई बहनों की अच्छी शिक्षा माँ की प्राथमिकता थी । इसी प्रकार वक्त गुजरते हुए जिंदगी से जूझते हुए किसी तरह अनिल ने स्नातक की पढ़ाई पूरी की थी और ईश्वर की कृपा से एयर फोर्स मे साधारण सी नौकरी मिल गई थी जिससे अपनी माँ को कुछ वित्तीय सहायता देने लायक तथा परिवार को थोड़ी स्थिरता देने लायक हो गया था। सालों बाद उसकी अपने जिले नासिक (महाराष्ट्र) में घर के पास पोस्टिंग हुई थी – एयर फोर्स स्टेशन देवलाली। देवलाली नाशिक शहर से 40 किलोमीटर दूर।

देवलाली कैंप में पंचवटी की ओर जाने वाली बस की तरफ बढ़ते हुए अचानक अनिल के कदम रुक गए । 'आरती' ! पल भर में उसने वर्षों का हिसाब कर लिया। पूरे 14 वर्ष। पहचानने में थोड़ी भी देर न लगी।'हां'..'हां' ..'आरती ही तो है'। बस को छोड़कर कुछ कदम आगे बढ़ाते हुए उसने पुकारा- 'आरती'। वह नारी मुड़कर खड़ी हो गई। अपरिचय के भाव के साथ उसने अनिल को देखा, बोली- आप'!

'पगली। आप-आप क्या कर रही हो- मैं अनिल हूं'।

अपरिचित पुरुष द्वारा कहे गए 'पगली' शब्द के धक्के को संभालने में आरती को कुछ समय लगा। 'अनिल..मतलब...' फिर एकाएक उसके शब्दों के साथ हंसी-खुशी के फव्वारे छूटने लगे,'अरे अनि...तुम'।

'जी हां देवी जी मैं। कोई भूत नहीं हूं। वही पाजी-बदमाश- अनि..अभी भी जिंदा हूं।'

आरती हंसती हुई बोली-'पाजी तो तुम हो ही, कितने वर्षों बाद मिले हो, कहां गायब हो गए थे?'

'जी हां, पूरे 14 वर्षों बाद मिल रहे हैं। अच्छा पहले बताओ जा कहां रही हो?'

'घर'...।
'वही घर?'।
'यस सर, वही घर'।
'चलो, घूम ही आते हैं'।
देवलाली कैंप का चक्कर लगाते हुए दोनों आगे बढ़े। बाईं तरफ फिलिप्स इलेक्ट्रॉनिक्स की दुकान,दाहिने मेडिकल स्टोर छोड़ते हुए सिलेक्शन रेडीमेड कपड़ों की दुकान छोड़ते हुए सड़क पार किया, कुछ कदम बाएँ चलते ही संसरी नाका की वो पतली गली।

अनिल की आंखों में अतीत के कुछ चित्र तैरने लगे। थोड़ा और आगे जाने पर वही स्कूल था जहां शैशव काल के कुछ वर्ष बीते थे। वहीं अनिल और आरती ने चौथी कक्षा तक साथ साथ पढ़ा था। आरती एक मकान के सामने रुकी। ताला खोलकर घर में प्रवेश करने लगी। बोली - 'क्यों यहाँ से कुछ याद आ रहा है? इसी बरामदे में बैठकर हम लोग खेला करते थे। एक दिन हम लोग झगड़ पड़े थे। मैं रोने लगी थी तो तुमने मुझे चुप कराने के लिए कितनी मिन्नतें की थी।'

अनिल नए घर में प्रवेश कर चौकी पर बैठते हुए कहा - 'तुम्हें अभी तक याद है वह सब। मैं भी अपने बचपन के कुछ हसीन छड़ों को अभी तक भूल नहीं पाया हूं।'

अनिल आरती के साथ घर तक आते हुए सोच रहा था- आरती के घर में उसके बच्चे होंगे,पति होंगे लेकिन वहां किसी को भी उपस्थित ना देखकर उसके मन में रह-रह कर प्रश्न उठने लगे कि...'क्या आरती ने अभी तक शादी नहीं की है? और अगर शादी हो गई है तो.....' फिर भी वह चुप रहा।

'क्यों अनिल चुप क्यों हो,कुछ बोलते क्यों नहीं?

अनिल ने आरती की ओर देखा। उसके शुभ्र चेहरे के लावण्य को वह देखते ही रह गया। बोला-'हां तुम बैठो तो। बातें तो बहुत हैं'।

'ठीक है मैं तुम्हारे लिए चाय बना कर लाती हूँ फिर आराम से बैठ कर बातें करेंगे।'

आरती अंदर चली गई। अनिल हिसाब जोड़ने लगा। के जी वन से क्लास 4, पाँच साल। उसके बाद अनिल ने दूसरे स्कूल में दाखिला ले लिया

था। फिर करीब 4 वर्ष बाद अनिल ने आरती को देखा था, जब वह नौवीं में पढ़ता था। स्टेशन रोड के पास वाले मैदान के सामने उस दिन अनिल और उमेश खड़े थे। उमेश उसके नए स्कूल का दोस्त था। मैदान में लड़कों की भीड़ जमी थी। उस दिन अनिल की टीम के साथ दूसरे टीम का क्रिकेट मैच था। विपक्षी टीम के साथ तगड़ा संघर्ष था। तभी सामने एक बस से एक किशोरी उतरी। आरती।....साड़ी पहनी हुई आरती। चौंक उठा था उस दिन किशोरव्यस्क अनिल। साड़ी में आरती अद्भुत सुंदर लग रही थी। उसके माथे पर लगी बिंदिया तो उसकी सुंदरता में चार चांद लगा रहे थे। अनायास ही अनिल को उस दिन बिहारी का यह दोहा याद आ गया था-

“कहत सबै बेंदी दिए,आंक दस गुनो होत । तिय लिलार बेंदी दिए अगनित बढ़त उदोत।”

सामने से गुजरते हुए आरती ने मुस्कुराकर अनिल की और देखा और पूछा था–‘कैसे हो?’

अनिल के मुख से शब्द नहीं फूटे थे। सिर्फ सिर हिला दिया था। आरती जा चुकी थी। उस दिन क्रिकेट के मैच में अनिल ने चार पांच कैच मिस किए थे, बल्लेबाजी में शून्य रन पर आउट होकर आया था। खेल की समाप्ति पर मित्रों के अभियोग और विरोध अनिल के कानों में नहीं गए थे, उसकी पूरी चेतना में उस वक्त ‘एक किशोरी साड़ी पहनी हुई’ छाई हुई थी, कानों में गूंज रहा था - कैसे हो..... कैसे हो।

उस दिन के बाद हर रोज वह स्टेशन रोड पर बस स्टॉप पर खड़ा रहता। आरती ने दूसरे कॉलेज में दाखिला लिया था। स्कूल से वह बस से ही लौटती, स्टेशन रोड पर उतरती। अनिल खड़ा रहता। देखना, हंसना, कांप उठना चंद बातें एक नशा सा हो गया था। लगातार तीन वर्ष। ग्यारहवीं के अंत तक। एक दिन अनिल से रहा नहीं गया था और अधीर होकर कहा था- “मैं..... मैं तुमसे...”।

मृदु हंसी के साथ आरती ने कहा था-‘तुम मेरे दोस्त हो अनि...बहुत अच्छे दोस्त’।

उसके बाद अनिल परिवार सहित एयर फोर्स की नौकरी मे जहां- जहां पोस्टिंग हुई वहाँ सपरिवार घूमता रहा । जीवन की ढेर सारी जटिलताएं, यंत्रणा, संघर्ष चलता रहा कभी-कभार छुट्टी लेकर घर आता तो उमेश वगैरह से मुलाकात कर लेता था।

इस बार भी वह छुट्टी लेकर ही आया था, उमेश के घर भी गया था। संजय, दिलीप, संध्या सब से मिलकर वह लौट रहा था और..... आज, 14 वर्ष बाद.....

‘लो चाय पियो’, दो प्याली चाय लेकर आरती आई।

प्लेट में कुछ नमकीन बिस्किट भी थे। अनिल ने चुपचाप चाय की प्याली उठा ली। आरती बोली-‘सुनाओ, क्या हाल है।’

एक लंबी सांस लेते हुए अनिल ने कहा-‘बस फिलहाल एयरफोर्स मे नौकरी कर रहा हूं, आजकल यहीं पोस्टेड हूँ ’।

‘याद है, नौवीं दसवीं में पढ़ते समय तुम रोज उमेश या श्रीनिवास के साथ स्टेशन रोड पर खड़े रहते थे? किसका इंतजार करते थे?

अनिल के पुराने जख्म हरे होने लगे थे। बस वह बात बदलना चाहता था। बोला- ‘रहने दो, वह सब बातें.... स्कूल के दोस्तों के बारे में कुछ बता सकती हो’।

आरती कुछ सोचती ही बोली –‘कुछ लोगों के बारे में तो मैं बता सकती हूं,पापिया पुणे विश्वविद्यालय से पीएचडी कर रही है, कुमुद की शादी हो गई है, उसके पति बिलासपुर में मेडिकल अफसर है। माधुरी की शादी हो गई एक मैकेनिकल इंजीनियर से। नूतन टेल्को में सर्विस करती है। सीमा ने लव मैरिज किया। मैं तो बस इतना ही जानती हूं, और तुम तो किसी की खबर नहीं रखते’....

‘हां... मैं भी कुछ के बारे में जानता हूं। अश्विनी आजकल फिल्मों में काम कर रहा है। और सुधांशु याद है? वो आई आई एम अहमदाबाद में प्रोफेसर है। संगीता और सुनीता दोनों बेंगलुरु में किसी आई टी फर्म में अच्छे पोजीशन पर हैं। अच्छा, एक बात बताओ - मांग में सिंदूर नहीं दिख रहा है- क्यों? सात फेरों से अरुचि है क्या?’

‘बस यूं ही।’

‘अच्छा-अंजन के बारे में कुछ पता है? शादी वादी की या नहीं। क्या कर रहा है आजकल?’

‘हां, उसकी बात तो मैं भूल ही गई थी।’ कुछ खामोश रहने के बाद आरती फिर बोली- ‘बेरोजगारी की हालत में भी उसने शादी की थी। एक बच्चा भी हुआ था, लेकिन पैदा होने के साथ ही गुजर गया था। और आज से करीब 2 साल पहले अंजन की मौत हो गई।’

‘क्या?.... सुनकर अनिल के दिल पर जैसे वज्रपात हुआ। पल भर में पूरे वातावरण में खामोशी छा गई। अनिल सोचता रहा- अंजन से आखिरी बार प्रदीप के यहां मिला था, वहां नीरज, मुनि,सुमन सभी आए थे, प्रदीप के बहन की शादी थी । सबने बहुत मजे किए थे। ....और आज वह हमारे बीच नहीं है। नियति भी बड़ी निष्ठुर होती है।

काफी समय बाद ..... कंपकपते हुए शब्दों में अनिल के कंठ से आवाज निकली- ‘क्या हुआ था?’ आरती कहती गई-‘कॉलेज के दिनों से ही उसे किसी लड़की से प्यार हो गया। उसके प्रेम में अंधा हो गया था वह। लड़की भी अधिक दिनों तक अपने को रोक कर नहीं रह पाई। अंततः प्रेम पथ पर कदम रखते हुए लड़की को कहना पड़ा था, अंजन.. मैं आ गई। घर में बिना बताए ही दोनों ने मंदिर में जाकर शादी कर ली। दिन बीतते गए। लड़की ग्रेजुएट हो गई। अंजन पढ़ाई लिखाई में दिल नहीं लगाता था, वह पास ना हो सका। उसने पढ़ाई छोड़ दी। लड़की समझाती रह गई, लेकिन दोबारा पढ़ने के लिए उसे राजी ना करा सकी।

घर के लोग जान गए। परिवार वालों से संबंध विच्छेद हो गया। एक समय आया जब स्थिति सीमा पार कर गई। लड़की ने अंजन से कहा- ‘इस तरह कितने दिनों तक चलेगा, यूं बैठे रहना अब संभव नहीं है,तुम कुछ करते क्यों नहीं?’

लड़की के कहने का अंजन पर कोई असर नहीं पड़ा। निराश होकर वह खुद काम की तलाश में घर से बाहर निकली। एक छोटा-मोटा काम भी मिला। छोटा सा मकान लेकर दोनों ने घर बसाया । उस बेरोजगारी और परेशानियों के बीच ही अंजन ने शराब पीना शुरू कर दिया। लड़की काम से थकी मांदी आती और अंजन नशे में धुत होकर आता। पारिवारिक अशांति बढ़ती गई। ऐसे में उन्हें एक संतान दी हुई लेकिन पैदा होते ही चल बसी। वह लड़की इस सदमे को बड़ी मुश्किल से बर्दाश्त कर पाई थी, अंजन के रवैये को वह ज्यादा दिन तक सहन ना कर सकी और एक दिन उसके धैर्य का पुल टूट गया। वह बरस पड़ी- “और कितने दिनों तक इस तरह हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे और कब तक तुम्हें इस तरह बैठाकर मैं खिलाती रहूँगी? और तो और मेरे ही पैसों से शराब भी पीते हो, शर्म नहीं आती तुम्हें?”।

‘ठीक है, मैं कुछ न कुछ तो करूंगा ही। मैं जा रहा हूं’।... ‘कहकर वह उत्तेजित अवस्था में घर से निकल गया। काम की तलाश में इधर-उधर भटकता रहा लेकिन निराशा ही हाथ लगी। ऐसे में ब्लड बैंक के पास से गुजरते हुए वह अचानक रुक गया । उसे याद आया कि अपना खून भी तो बेचा जा सकता है,यह सोच कर वह खुशी से झूम उठा। अंततः अपने सोची हुई बात को उसने साकार किया। अपने खून की कमाई पत्नी के हाथों सौंपने के लिए वह बेसुध होकर चला आ रहा था। उसने दूर से ही देख लिया था कि उसकी पत्नी बरामदे में खड़ी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। लेकिन अचानक एक दिल दहला देने वाले हादसे ने पूरे वातावरण में हलचल मचा दिया। सड़क पार करते समय अंजन का शरीर ट्रक के नीचे आकर लहूलुहान हो गया था। अंजन और उसकी पत्नी के बीच में मात्र एक सड़क पार करने भर की दूरी शेष थी, जिसे पार करते हुए अंजन जीवन रूपी विशाल सागर को पार कर गया। उसकी पत्नी उसे भरी आंखों से देखती रह गई... लेकिन उसका अंजन दोबारा लौटकर नहीं आया। बीच सड़क पर उसका लहूलुहान शरीर पड़ा हुआ था। 10, 20 और 50 को कई नोट बिखरे पड़े थे। उसके दाहिने हाथ में एक सौ का नोट फंसा हुआ था।’

अनिल चुप था। बहुत देर बाद उसके मुख से शब्द निकले – ‘तुमने यह सब किससे सुना?’

‘उसकी पत्नी से ’
‘कहाँ रहती है वो’
‘यहीं...’
अनिल उत्सुक हो उठा – ‘यही ?... कहाँ?... ‘कौन है’?

आरती की दोनों आँखें आरती की आँखों मे स्थिर हो गई,“तुम्हारे सामने जो अभी बैठी है”।

सुनते ही अनिल सन्न रह गया । वह महसूस करने लगा उसके हृदय में जैसे भयंकर तूफान आया हो। ‘तुम....? आ... रती...तुम....? जैसे कोई गोपन मंत्रोच्चार कर रहा हो अनिल।

आरती हंस पड़ी-‘हां, अनि....मैं’।

एक बार सिर्फ पूरे वातावरण में निस्तब्धता छा गई। एकाएक आरती का रुद्ध कंपित स्वर गूंज उठा। ‘ मेरी वजह से अंजन चला गया, मैंने ही उसकी हत्या की है।’

आरती की आंखों में सागर उमड़ आया था किंतु उसने अपने अंदर उसने वाले तूफान को अत्यंत संयम पूर्वक रोक रखा था। तभी पड़ोस के कमरे से रेडियो पर गाने की आवाज गूंज उठी -

“कल हम जुदा हुए थे जहां साथ छोड़कर.....
हम आज तक खड़े हैं उसी दिल के मोड़ पर.....
हमको इस इंतजार का कुछ तो सिला मिले.....”।

अनिल ने कुछ सोचते हुए कहा -‘यह गाना सुना तुमने? मैं भी तुमसे यही कहने वाला था। इस जीवन के दुर्गम पथ पर चलते हुए बहुत बार ऐसा महसूस किया कि एक साथी होता तो सफर शायद आसान हो जाता। बचपन में ही तुमने जो स्थान मेरे दिल में बना लिया था वह स्थान तुम्हारे अलावा कोई और नहीं ले सका। मैंने सदा यही चाहा था कि तुम मेरे हृदय में कुमुद की भाँति सदा खिली रहो और मैं उसकी खुशबू में सदा डूबा रहूं। बहुत कोशिश की, कि जीवन का सफर अकेले ही तय कर लूँ, लेकिन .... अब नहीं चला जाता आरती। मेरे हृदय की बंजर जमीन को अपने प्यार से सींच दो....आरती। मुझे तुम्हारा प्यार चाहिए.... आरती । मैं... मैं तुमसे....’

काफी देर चुप रहने के बाद विराट शून्यता लिए आरती बोली - ‘मैं तुम्हारे दर्द को समझती हूं - अनि। लेकिन.... अब बहुत देर हो चुकी है। मैं जानती हूं तुम मुझे बेहद प्यार करते हो। पर....शायद इस जन्म में तुम्हें वह खुशी मैं नहीं दे पाऊंगी जिसकी तुम्हें लालसा है। ईश्वर से प्रार्थना करती हूं- अगले जन्म में तुम्हारे हृदय की कुमुदिनी बनकर अपने प्यार की एक-एक बूंद से उस बंजर जमीन को सींच सकूँ’।

अनिल गंभीर जड़ता तोड़कर उठ खड़ा हुआ और बोला -‘ठीक है आरती ! इस जन्म मे दोस्ती का हक तो याद करने दोगी न?’

‘हाँ, अनि । तुम मेरे दोस्त हो। मेरे अपने, मेरे हृदय के .....बहुत अच्छे दोस्त।’

अनिल जाने के लिए घर से बाहर निकल आया। आरती दरवाजे तक उसे छोड़ने आई। अनिल सड़क के किनारे-किनारे चलने लगा, उसने आसमान की तरफ देखा । शाम ढलने वाली थी। पंछी अपने झुंड में उस नीले विस्तृत व्योम मे विचरण कर रहे थे ।उसी में एक पंछी सबसे अलग... बिलकुल अकेली....उस विस्तृत व्योम मे उड़ रही थी। कोई साथी नहीं, कोई संगी नहीं..... बिल्कुल अकेली।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान संस्थान के निदेशक प्रो. उत्तम कुमार सरकार सहायक प्रबन्धक (शैक्षिक) श्रीमती सुचंद्रा बोस को पुरस्कार देते हुए।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान संस्थान के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) महोदय श्री अरुणाभ दास लेखा कार्यकारी सुश्री श्रीपर्णा दास को पुरस्कार देते हुए।

मेरा संदकफू भ्रमण

अरुणाभ दास

"संदकफू" का शाब्दिक अर्थ है 'जहरीले पौधों की चोटी'। पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में भारत और नेपाल के सीमा पर सिंगालीला रिज में सबसे ऊंचा हिल स्टेशन है संदकफू। यह समुद्र पृष्ठ से लगभग 3636 मीटर (11930 फीट) ऊंचा है। पिछले कई सालों से मेरा स्वप्ना था, संदकफू और फालुट घूमने का, क्योंकि यहाँ से दुनिया की सबसे ऊँची बर्फ से ढकी हुई कुछ चोटियाँ जैसे माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर), माउंट कंचनजंघा (8586 मीटर), माउंट लोतसे (8516 मीटर), माउंट मकालू (8481 मीटर) आदि देखने का सुनहरा मौका मिलता है।

संदकफू-फलुट रूट को ट्रेकर्स के लिए स्वर्ग माना जाता है। हालांकि समय के कमी के कारण हमलोग इस बार ट्रेकिंग करने में समर्थ नहीं हो पाए थे। शायद आपको इस बात की जानकारी होगी कि नवंबर का महीना, बर्फ से ढकी हुई चमकदार चोटियाँ देखने के लिए बहुत ही बढ़िया समय होता है। तो ऐसा ही एक नवंबर के रात को मैं अपने चारों साथियों के साथ संदकफू जाने के लिए निकल पड़ा। शियालदह स्टेशन से रात 10.05 के दार्जिलिंग मेल से हमलोग अगले दिन सुबह 08.00 बजे न्यू-जलपाईगुड़ी पहुंचे। न्यू-जलपाईगुड़ी से हमलोग पहले से बुकिंग किए हुये गाड़ी से करीब चार घंटे में पहुंच गए 85 किलोमीटर दूर मानेभंजन पर, जिसे संदकफू-फालूट भ्रमण का गेटवे माना जाता है। यहां से हम बोलेरो कार से चिरस्थायी ओक, पाइन, सिल्वर फार, बार्च के बीच में से चलते चलते करीब एक घंटे में पहुँच गए एक छोटे से गांव टुमलिंग पर और यहाँ पहले से बुकिंग किया हुआ "शिखर लॉज" में चेक-इन कर गए ।

टुमलिंग से उसदिन सूर्यास्त का बहुत ही सुंदर दृश्य देखने को मिला। अगली सुबह हमें सूर्योदय का मनमोहक नजारा भी देखने को मिला। नाश्ता करने के बाद हम रवाना हो गए बंगाल के सबसे ऊंची बिंदु, संदकफू के लिए, जो टुमलिंग से करीब ग्यारह किलोमीटर दूर है। संदकफू में हमलोग पहले से बुकिंग किए हुए "होटल सनराईज" में चेकइन किये। होटल से हिमालय पर्वत श्रृंखला की लुभावनी एवं मनमोहक सुंदरता ने हम सबका दिल जीत लिया।

लंच के पश्चात, हम सभी, सूर्यास्त देखने के लिए "आहल" पहुंचे। सच कहूँ तो मैंने जिंदगी में पहले कभी इतना आश्चर्यजनक सूर्यास्त नही देखा था। अगले दिन सभी प्रातः चार बजे जाग गए और होटल सनराईज के छत पर अपने कैमरा के साथ पहुंच गए। ठंड बहुत ज्यादा थी और होटल में लगा थर्मोमीटर माइनस तीन डिग्री का तापमान दिखा रहा था। इतनी तेज़ हवा चल रही थी कि स्वयं को संभालना भी मुश्किल हो रहा था। लेकिन जैसे

ही हम सूर्योदय को प्रत्यक्ष करना शुरू किए , सारे कष्ट जैसे पल में दूर हो गए। सुनहरे रंग में शानदार ढंग से जगमगाता हुआ चमकदार लाल-गुलाबी-नारंगी रंग की चकाचौंध नीचे घाटी में लहराते बादलों के ऊपर विशाल बर्फीले पहाड़ों पर प्रतिबिम्बित अंधेरे को चीरते हुए मन में एक विनम्र अनुभूति जागृत कर दिए।

अगले दिन सुबह हम सभी रवाना हो गए पश्चिम बंगाल के दूसरी ऊंची चोटी फलुट (3595 मीटर) के लिए। पत्थर और बोल्डर से भरा हुआ पूरा 21 किलोमीटर का रास्ता, हमलोग कंचनजंघा को देखते हुए दो घंटे में पहुंच गए। यहाँ से पर्वत श्रृंखला और भी नजदीक से देखने को मिला। हमारे बाएं ओर एवरेस्ट क्लस्टर था, जिसमें दुनिया के चौथे और पांचवें सबसे ऊंचा पर्वत, ल्होत्से और मकालू शामिल थे। इन तीन राजसी चोटियों को एक साथ देखने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को हासिल होता है।

कहते हैं वसंत ऋतु (अप्रैल) में जब रोडोडेंड्रन खिलते हैं, तो यह पूरा क्षेत्र गुलाबी, लाल और सफेद रोडोडेंड्रन फूलों के शानदार चादर ओढ़कर एक जादुई पल पैदा करती हैं। इसे देखने के लिए हमें संदकफू और फलुट लौटके आना ही पड़ेगा। तब तक इस भ्रमण के सुनहरे स्मृतियों को हम अपने यादों में सँजोये रखेंगे ।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान संस्थान के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) महोदय श्री अरुणाभ दास सहायक प्रबन्धक (दाखिला कार्यालय) श्रीमती मधुश्री देबनाथ को पुरस्कार देते हुए।

नारीवाद और माँ

मधुश्री देबनाथ

इसके मूल में नारीवाद महिलाओं के लिए पूर्ण सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक समानता में विश्वास है। नारीवाद बड़े पैमाने पर पश्चिमी परंपराओं के जवाब में उभरा जो महिलाओं के अधिकारों को प्रतिबंधित करता था लेकिन नारीवादी विचार की वैश्विक अभिव्यक्तियाँ और विविधताएँ हैं।

नारीवाद सामाजिक आंदोलन जो महिलाओं के लिए समान अधिकार चाहता है। महिलाओं के अधिकारों के लिए व्यापक चिंता प्रबोधन काल से है आंदोलन की पहली महत्वपूर्ण अभिव्यक्तियों में से एक मैरी वॉल्स्टनक्राफ्ट की ए विन्डिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वुमन थी।

नारीवाद का लक्ष्य उन प्रणालीगत असमानताओं को चुनौती देना है जिनका महिलाएं दैनिक आधार पर सामना करती हैं। आम धारणा के विपरीत नारीवाद का पुरुषों को नीचा दिखाने से कोई लेना-देना नहीं है, वास्तव में नारीवाद किसी भी लिंग के खिलाफ लिंगवाद का समर्थन नहीं करता है। नारीवाद समानता की दिशा में काम करता है, महिला श्रेष्ठता की नहीं।माँ भूलती नहीं,

याद रखती है हर टूटा सपना, नहीं चाहती कि उसकी बेटी को भी पड़े उसी की तरह आग में तपना ।।

माँ जानती है, जिन्दगी कि बगिया में फूल कम शूल अधिक हैं, उसे यह भी ज्ञात है कि समय सदा साथ नहीं देता ।।

वह अपनी राजदुलारी को, रखना चाहती है महफूज़, नहीं चाहती कि उस जान से ज्यादा, अज़ीज़ बेटी पर कभी भी उठे उँगली।।

इसलिए वह भीतर से नर्म होते हुए भी ऊपर से दिखती है कठोर, जैसे रात की सियाही छिपाए रहती है अपने दामन में उजली भोर।।

संस्थान में उत्साह एवं उमंग के साथ मनाये गये राजभाषा पखवाड़ा 2022 की उज्ज्वल झलक। जहां माननीय निदेशक प्रोफेसर उत्तम कुमार सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश चंद्र मिश्रा को फूलों के गुलदस्ता देकर स्वागत कर रहे हैं।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान संस्थान के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (मानव संसाधन) महोदय श्री अरुणाभ दास सह-सहायक अभियंता (विद्युत) श्री चिरंजीब चैटर्जी को पुरस्कार देते हुए।

चाखी खुंटिया: पुरी के योद्धा पुजारी

महेश पटनायक

चंदन हजूरी उर्फ चाखी खुंटिया का जन्म 7 जनवरी 1827 को ओडिशा के पुरी में पिता रघुनाथ खुंटिया उर्फ भीमसेन हजूरी और माता कमलाबती के घर हुआ था। उनके पिता भगवान जगन्नाथ के सेवक थे। चूंकि बच्चे का जन्म तब हुआ जब उसके पिता भगवान को चंदन का लेप पहना रहे थे, इसलिए उसका नाम "चंदन हजूरी" रखा गया। लेकिन उन्हें चाखी खुंटिया के नाम से जाना जाता है। छोटी उम्र में, उन्हें जगन्नाथ मंदिर में अपने कर्तव्यों को निभाने में मदद करने के लिए उड़िया, संस्कृत और हिंदी साहित्य सिखाया गया था। उन्होंने अखाड़ों में पारंपरिक कुश्ती भी सीखी और बाद में पुरी में युवाओं को कुश्ती और सैन्य अभ्यास सिखाया। वह उस समय के माहिर पहलवान माने जाते थे।

वह अक्सर अपने पिता के साथ उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा पर जाते थे। वास्तव में, इस प्रकार वह पुरी और उड़ीसा के अन्य तीर्थस्थलों में आगंतुकों का मार्गदर्शन करने के अपने पारंपरिक पेशे से अवगत और उन्मुख हुए। चाखी खुंटिया मेरोपंथा के पारिवारिक पुजारी या पांडा थे, जो मनुबाई के पिता थे, जिनका नाम झाँसी के राजा गंगाधर राव से शादी के बाद लक्ष्मीबाई रखा गया था।

झाँसी के राजा गंगाधर राव की असामयिक मृत्यु हो गई। लक्ष्मीबाई ने पहले अपना इकलौता बेटा भी खो दिया था। ब्रिटिश लोगों ने उन्हें झाँसी की राजगद्दी पाने के लिए पुत्र गोद लेने पर रोक लगा दी। इसके बाद, ब्रिटिश शासक ने सारी शक्तियाँ अपने पास ले लीं और लक्ष्मीबाई शक्तिहीन हो गईं। लेकिन उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

उन्होंने अपने समय में चाखी खुंटिया से सहायता मांगी और खुंटिया ने उन्हें हर संभव मदद दी। चाकी खुंटिया ने "सिपाही" कहे जाने वाले भारतीय सैनिकों के बीच आक्रोश भड़काकर एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और एक विद्रोह का आयोजन किया जिसने बाद में बहुत हिंसक रूप ले लिया। खुंटिया भारतीय सैनिकों के धार्मिक मार्गदर्शक के रूप में प्रसिद्ध थे। इस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के कारण चाखी खुंटिया को कई बार गिरफ्तार किया गया और सलाखों के पीछे रखा गया।

उस समय महारानी विक्टोरिया ने विद्रोहियों को माफी की घोषणा की और चाखी खुंटिया को शीघ्र ही रिहा कर दिया गया। चाखी खुंटिया ने अपने जीवन का अंतिम समय पुरी में बिताया। उन्होंने खुद को साहित्यिक गतिविधियों और भगवान जगन्नाथ से संबंधित धार्मिक अनुष्ठानों के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने बहुत सी कविताओं की रचना की, जिनमें से अधिकांश भक्ति गीत हैं। उनके कुछ गीतों में ब्रिटिश सरकार के अमानवीय और दमनकारी कदमों पर गहरी नाराजगी और गहरा आक्रोश व्यक्त हो रहा है। उन्होंने 1870 में पुरी में अंतिम सांस ली।

यह बहुत गर्व की बात है कि 19वीं शताब्दी का एक पुरी पांडा न केवल कई भारतीयों के वीरतापूर्ण कार्यों से प्रेरित था, बल्कि उसने स्वयं झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई और बड़ी संख्या में देशभक्ति की भावना वाले सैनिकों को भी प्रेरित किया।

10 दिन का एकांत

मानसी सान्याल

एक दोस्त के साथ आकस्मिक चैट ने विपाशना के बारे में जानकारी दी। मैंने इसके बारे में पहले कभी नहीं सुना था और जब मुझे इसके बारे में पता चला, तो मेरा उत्सुक दिमाग सक्रिय हो गया। मैंने इसे Google में देखा, उनकी वेबसाइट पर गयी और खुद को उनकी 10 दिनों की कार्यशाला में से एक में नामांकित की।

मैं ध्यान और उसी के प्रभावों का पता लगाना और अनुभव करना चाहती थी।

विपाशना, जिसका अर्थ है कि 'चीजों को देखना जैसा कि वे वास्तव में हैं,' ध्यान की भारत की सबसे प्राचीन तकनीकों में से एक है। यह 2500 साल पहले भारत में सार्वभौमिक बीमारियों के लिए एक सार्वभौमिक उपाय के रूप में सिखाया गया था, अर्थात 'आर्ट ऑफ लिविंग।' दुर्भाग्य से, यह अभ्यास भारत में लुप्त हो गया था, परंतु म्यांमार में सबसे शुद्ध रूप में यह प्रथा प्रचलित था। यह प्रथा सदियों से गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से सौंपी गई है और 1968 में श्री एस.एन गोयनका द्वारा भारत वापस लाई गई थी । तब से पूरे भारत में इसका अभ्यास किया जा रहा है।

इस जानकारी से सुशोभित होकर, मैं 3 मई, 2023 को पानीहाटी (पश्चिम बंगाल) में स्थित उनके ध्यान केंद्र, धम्म गंगा में हाज़िर हुई और अपना पंजीकरण करवाई। वहाँ जीवन के सभी क्षेत्रों और विभिन्न आयु समूहों के लोग थे, जो 18 से शुरू होते थे और 70 वर्ष के लोगों तक जाते थे। मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि कैसे युवा पीढ़ी आध्यात्मिकता की तलाश में आए थे।

दिन 0 : एक बार पंजीकरण हो जाने के बाद, हमें अपने कीमती सामान और मोबाइल फोन सौंपे गए लॉकरों में रखना पड़ता था, और चाबियाँ प्रबंधन को जमा करनी होती थी, जो 10 दिनों के बाद हमें वापस कर दी जानी थी। कल्पना कीजिए, फोन के बिना 10 दिन और बाहरी दुनिया से डिस्कनेक्ट! यह पहली चुनौती थी।

हमें अपने कमरे सौंपे गए। उसके बाद, हम शाम 6.00 बजे दिन के अंतिम भोजन के लिए भोजन क्षेत्र में इकट्ठा हुए। रात के खाने के बाद, हमने एक अभिविन्यास सत्र किया, जिसमें हमें आने वाले दिनों में पालन किए जाने वाली प्रणाली, नियमों के बारे में जानकारी दी गई। हमें आर्य मौन का अभ्यास करना था जिसमें इशारों के माध्यम से भी कोई संचार नहीं करना था। हमें विचार करना था कि हम अकेले रह रहे थे।

एक और बड़ी चुनौती! एकमात्र संचार स्वयंसेवकों (सेवक / सेविकाओं) के साथ होगा, जो कि न्यूनतम है, अगर आपको मदद की आवश्यकता हो, और ध्यान से संबंधित किसी भी चीज़ के लिए शिक्षक के साथ। अभिविन्यास और ध्यान के संक्षिप्त परिचय के बाद, हम अपने निर्धारित कमरों में चले गए ।

अगले दिन सुबह 4.00 बजे वेक-अप बेल के साथ शुरू होता है। 4.30 बजे तक, हम ध्यान हॉल में इकट्ठा हुए और प्रशिक्षण प्रक्रिया शुरू हुई। पहला काम अपनी सांस पर ध्यान केंद्रित करना था ... साँस लेना, साँस छोड़ना और आपकी नासिका और उसके आसपास के क्षेत्र में आपकी सांस कैसे और कहाँ महसूस हो रही है। सभी को वहीं ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता थी और मन, जो चंचल स्वभाव की है, चारों ओर दौड़ने के लिए उत्सुक थी। ध्यान केंद्रित करने के लिए उस पर जबरन पट्टा लगाना पड़ता था।

सुबह 6.30 बजे पहला ब्रेक मिला। भोजन कक्ष में नाश्ता तैयार था और हमने स्वयं की मदद की और अपने निर्धारित स्थान पर चुपचाप नाश्ता किया । नाश्ते के बाद, हम स्नान और अन्य व्यक्तिगत कामों के लिए अपने क्वार्टर में चले गए । सुबह 8.00 बजे ध्यान हॉल में वापस आना पड़ा ताकि सुबह 11.00 बजे तक ध्यान जारी रखा जा सके, जब दोपहर के भोजन और आराम के ब्रेक का समय होता है। ब्रेक दोपहर 1.00 बजे तक था। हम सभी दोपहर 1.00 बजे ध्यान हॉल में चले गए और शाम 5.00 बजे तक बैक टू बैक ध्यान लगाने का कार्यक्रम चला। 5.00 बजे की घंटी इतनी मीठी कभी नहीं सुनाई दिया। भोजन कक्ष में चाय/दूध, मुरमुरा और फल, यही दिन का अंतिम भोजन था। खाना खाने और परिसर के चारों ओर थोड़ी देर टहलने के बाद, मैं अपनी पीठ सीधी करके कमरे में जाती थी जब तक कि हॉल में इकट्ठा होने के लिए शाम 5.50 बजे फिर से घंटी नहीं बजती थी। तब तक रीढ़ की हड्डी पूरे दिन उसे सीधी रखने की वजह से विरोध में चीख रहा था। लेकिन मैं वहां थी और मुझे वही करनी थी जिसके लिए मैं आयी थी। शाम का सत्र 6.00 बजे एक घंटे के ध्यान सत्र के साथ शुरू होता था, जिसके बाद डेढ़ घंटे का प्रवचन हुआ करता, जहां उन्होंने श्री गोयनका का रिकॉर्ड किया गया वीडियो दिखाया, जिसमें वे हमें तकनीक, उद्देश्य, प्रक्रिया के बारे में संबोधित करते थे। यह पूरे दिन का सबसे दिलचस्प हिस्सा था। इसके बाद एक और 30 मिनट का ध्यान सत्र होता था जहां आपको एक झलक दी जाती थी कि आपको अगले दिन क्या करना है। दिन की समाप्ति रात 9.00 बजे होती थी और हम अपने-अपने कमरों में सोने के लिए प्रस्थान करते थे।क्या दिन है! किसने उम्मीद की होगी कि मैं 10 घंटे से अधिक समय तक बैठी रहूँगी, एक जगह खुद पर ध्यान केंद्रित करूंगी और रात 9.30 बजे तक सो जाऊँगी। मैं खुद को खोज नए रूप से खोज रही थी, है ना!!

यह अगले 10 दिनों तक चलता रहा। यहां सिखाई जाने वाली तकनीक के माध्यम से, आपको पहले अनुशासन और निर्धारित आचार संहिता का पालन करने की उम्मीद है। यह अपने दिमाग को शांत करने और केंद्रित रहने में मदद करता है। अगला अपनी सांस पर ध्यान केंद्रित करना और इसके माध्यम से अपने दिमाग पर महारत हासिल करना है। चौथे दिन, जब मन शांत और केंद्रित होता है, तो विपाशना का अभ्यास शुरू किया जाता है: पूरे शरीर में संवेदनाओं का निरीक्षण करना, उनकी प्रकृति को समझना, और उन पर प्रतिक्रिया न करना सीखकर समता विकसित करना।

आप अपने अंदर अपना सारा ध्यान केंद्रित करके आणविक स्तर पर आत्मनिरीक्षण करते हैं। भावनाएं जो अंदर गहराई से दफन हो जाती हैं, बाहर आती हैं और आपका शरीर उस पर प्रतिक्रिया करता है, या तो उदासी या खुशी के रूप में, लेकिन आपसे इसे एक दर्शक की तरह तटस्थ और साक्षी भाव से देखने की उम्मीद की जाती है। अजीब लगता है ना? लेकिन आप वास्तव में कर सकते हैं और एक बार जब आप इसे करते हैं, तो आपका दिल हल्का, मुक्त महसूस करता है, जैसे कि आपने अभी एक गाँठ खोली है। यह अभ्यास की सुंदरता है, आपके निष्कर्ष आपके अपने अनुभव के माध्यम से हैं, न कि दूसरों ने जो महसूस किया है उससे प्रभावित हैं। अंत में, अंतिम दिन प्रतिभागी ध्यान के माध्यम से सभी के प्रति प्रेम, दया या सद्भावना फैलाने की तकनीक सीखते हैं, जिसमें पाठ्यक्रम के दौरान विकसित पवित्रता को सभी प्राणियों के साथ साझा किया जाता है।

10 वें दिन को हमें सुबह 10.00 बजे हमारे फोन वापस दिए गए और हमारी मौन खत्म हो गई। हमें बात करने का मौका मिलता है और हम इन अपने सहचारियों के साथ बात करते हुए समय व्यतीत की। अपने परिवार को कॉल करने के बाद, हम सभी इकट्ठा हो गए और एक-दूसरे को जानने लगे। दिनचर्या अन्य दिनों के विपरीत सुस्त थी, इसलिए हमारे पास बात करने के लिए पर्याप्त समय था। डाइनिंग हॉल, विशेष रूप से, जिसमें पिन ड्रॉप मौन हुआ करता था, लगातार बकबक के साथ जीवंत हो गया।यह कार्यशाला कई मायनों में आंख खोलने वाली थी।

इस अमूल्य सीख के साथ हम कुछ नए दोस्त बनाकर घर वापस आए थे ।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश चंद्र मिश्रा सचिव (निदेशक कार्यालय) श्रीमती प्रदीप्ता रॉय को पुरस्कार देते हुए।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी महोदय श्री आलोक चन्द्रा सुरक्षा अधिकारी श्री सत्य नारायण घोष को पुरस्कार देते हुए।

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश चंद्र मिश्रा सचिवीय सहायक श्रीमती मानसी सान्याल को पुरस्कार देते हुए।

फूलों से नित् हंसना सीखो

पियाली चक्रबर्ती

यह शीर्षक एक कविता से ली गयी है जिसका अलग-अलग उद्देश्य हो सकता है। कभी आत्म-अभिव्यक्ति का एक रूप, कभी जगत की सुन्दरता का वर्णन, मनोरंजन का एक रूप या कोई शिक्षण काउपकरण।

फूलों से हमें कई तरह की सीख मिलती है –
“सदैव प्रसन्न रहना तथा दूसरों को ख़ुशी बाँटना”

बगिया के फूलों को देखकर ही तो पता लगता है कि कैसे वे निरंतर ख़ुशी ख़ुशी एक दूसरे के साथ मिलकर रहते है... अर्थात एक सकारात्मक अभिव्यक्ति वातावरण को वे प्रदान करती हैं।

जब हम दिन भर के काम के बाद थके-हारे घर लौटते है और तभी अगर घर पर कोई फूल सजाकर रख दें तो उन फूलों को देखकर एक अजीब सी शांति मन को मिलती है।

इसका तात्पर्य यह है कि फूल हमें शांतिपूर्ण एवं नम्र होना सिखाता है। कई कवियों ने भी जीवन की सुख-दुख के साथ फूलों को जोड़ा है।

इसका कारण यह है कि जीवन भी फूलों की पंखुड़ियों जैसा ही है, मुर्झा जायें तो दुःख और खिलें तो ख़ुशी। जीवन का सही आधार देखा जायें तो फूलों से निर्मित है।

हमारा अपना व्यवहार और लक्ष्य इससे प्रेरित है।

आशा करती हूं कि उपर्युक्त शीर्षक की व्याख्या आप सभी पढ़ने वालों के मन में प्रसन्नता और खुशी पुष्प के समान ही खिलती रहेगी।

दिनांक 17 नवंबर 2022 को भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता के टाटा हॉल में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला में हिन्दी शिक्षण योजना से पधारीं राजभाषा प्राध्यापिका सुश्री अर्पिता रॉय व्याख्यान देते हुए। सभा में उपस्थित समस्त कर्मचारीगण राजभाषा कार्यशाला का लाभ उठाते हुए।

दिनांक 21-25 नवंबर, 2023 के दौरान आयोजित पाँच दिवसीय राजभाषा कंप्यूटर प्रशिक्षण की एक झलक। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना से राजभाषा प्राध्यापिका सुश्री अर्पिता रॉय कंप्यूटर प्रशिक्षण देती हुई।

वक़्त बदल रहा है

प्रदीप्ता रॉय

वक़्त बदल रहा है और उसके घेरे में बसे लोग,
रिश्ते बदल रहे हैं और उनसे जुड़ी हर डोर।

इस कृतिम दुनिया के दायरे में यु फँसा है मानव,
आज उसे कठपुतली सा नृत्य करवाता है प्रोगयोगिक दानव।

सोशल मीडिया के पर्दे के बाहर झाँक कर देख ऐ बदनसीब,
तसवीरों पर लाइक बटन की बढ़ती गिनति से,
समझता रहा खुद को तू खुशनसीब।

इतने अपनों को छोड़ आया युही पिछे,
क्यूँ? कब? किसे?- तो अब दिल भूल से भी न पूछे।
वक़्त बदल रहा है और उसके घेरे में बसे लोग।

माँ के हाथों के बने परठें अब नहीं जचते,
भूख लगने पर बच्चे भी आजकल स्विगी है कराते।
अमज़ोन को जैसे ही जंगल से अलग ठिकाना मिल गया,
घर-घर में ऑनलाइन खरीदारी का बढ़ गया सिलसिला।

आओ कभी विश्राम से सोचें, मन में ये प्रश्न जगायें!
किस ओर जा रही हमारी सभ्यता,
क्यों विलुप्त हो रही खुशियों की मान्यता,

अंतर्मन से आवाज जरूर आएगी, मन से द्वन्द अवश्य मिट जायेगी।
तकनीकी यंत्रो पर निर्भरता हो जाएगी कम।
समस्त संसार से तब ये कह पाएंगे हम,
नहीं! वक्त नहीं बदला और ना ही उसके घेरे में बसे लोग।

रिश्ते भी नहीं बदले और ना ही उनसे जुड़ी कोई डोर।
मन तो आज भी चित्रहार के गीत सुन कर ब्लैक एंड व्हाइट हो उठता है,
दादाजी का रेडियो साल में एक बार “या देवी सर्व भूतेषु” बजा ही लेता है।

युग के साथ ताल मिलाकर चलते हम मुसाफ़िर,
शिष्टाचार को आज भी अन्तर्मन में समेटे हुए है।
खुद भले ही व्हाट्सएप पर रिश्ते निभातें हों,
बच्चों को झुक कर आशीर्वाद लेना अवश्य सिखाते हैं।

राजभाषा विभाग द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष पर दिनांक 10 जनवरी 2023 को संस्थान के टाटा हॉल में आयोजित हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता की एक झलक। जिसमें सभी प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया

डर से करो मुकाबला

शुभ्रा धर

ज़िंदगी के सफर में, जीवन के अनेक दौर में,
मन में बैठ जाती है कई बार, हज़ारों भय और हज़ारों डर।

डर डर के हम चलते हैं, डर के सोने जाते हैं,
सपने में भी हम अकसर- खौफ भरी बातें करते हैं।

डर हमको क्या देता है? क्या हमने कभी सोचा है?
उलझन भरी जीवन से, डर क्या छुटकारा दिलाता है?

अंधेरा में जीवन-दिया, घेरना कैसी बात है?
आतंक से मन भरना क्या, हमको शोभा देता है?

डर से डर फहलता है, दिमाग में और घरों में,
जिस बात की डर होता है, उसी से जीवन जलता है।

जीवन से लढ़ना है तो, डर को पीछे छोड़ना है,
डर से ऊपर उठना ही, मेरी तजुर्बा सिखाया है।

डर को ले लो मुट्ठी में, डर से करलो सम्झौता,
डर को साथ ले चलोगी, तो पैरों में जंज़ीर होगा।

डर को पीछे भूलकर, कदम अगर बरहा सको,
डर हिम्मत हारकर, मुंह छुपाकर भागेगा।

तभी मिलेगी असली में जीवन का एक नया रूप,
घना साया हट जायेगा, निकलेगा सोना जैसा धूप।

तुम अगर साहस समेट सको, मिलेगा ऊर्जा औरों को,
तुम्हारी नया शक्ति तब, रोशन करेगा हर एक को।

ज़िंदगी के सफर में, उजाले का हाथ थाम लो,
अँधियारा तुम्हें छू ना पाए, यह मन मे ठान लो।

दिनांक 18 मई, 2023 को भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता के टाटा हॉल में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न किया गया। हिन्दी शिक्षण योजना से माननीय अतिथि एवं बाहरी विशेषज्ञ के रूप में उपनिदेशक (पूर्व) महोदय डॉ. सुनील कुमार लोका व्याख्यान देते हुए। सभा में उपस्थित समस्त कर्मचारीगण राजभाषा कार्यशाला का लाभ उठाते हुए।

विकास भारत में हिंदी का महत्व

सत्य नारायण घोष

हमारा देश एक विकासशील देश है हम सभी जानते हैं। प्रगति के नये नये आयाम की तलाश प्रत्येक भारतीय को आज है, प्रतिदिन प्रगति और विकास के लिए नई तकनीकें और नए अवसरों का समावेश किया जा रहा है। क्षेत्र में कोई भी हो, शिक्षा, कृषि, चिकित्सा, विज्ञान या मनोरंजन आज हमारा देश प्रगति के पथ पर है। हमारे वैज्ञानिक, हमारे शिक्षाविधि दिन रात प्रयत्न कर कर रहे है और वैश्विक स्थान की ऊचाई को छूने को इच्चुक है, ऐसा नहीं है कि हम ने अंतरराष्ट्रीय स्थान को प्राप्त नहीं किया है, बहुत सारे शेत्र ऐसे हैं जहां हमारे देश ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है और अपना लोहा मनवाया है।

हम अब अगर शीर्ष पर हैं तो हिंदी की बात आती है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, अनेकता में एकता वाला ये हमारा देश भीबिनातो से भरा है, इतनी सारी भाषाएं बोली जाती हैं, इथने प्रकार के संस्कार, वेशभूशा, भाषाएं, खान पान थाता रुचिया है की हम अपने ही देश के दूसरे राज्य में जाकर अजनबी सा महसूश करते हैं, वहां की भाषा हमें समझ नहीं आती ना ही अपनी बात उन्हें समझा पाते है, यह स्थिति बहुत ही विकट हो जाती है जब हम उस राज्य के साधारण जन मानव से किसी विषय पर बात करना चाहे।

आलेख के आरंभ में ही कहा गया कि हमारा देश विकासशील देश है, जिसका विकास निरंतर हासिल करना है, ताकि एक दिन ये विकसित देश कहलाए। कोई भी राष्ट्र उन्नत राष्ट्र तभी बनता है जब उनके वैज्ञानिक एवं शिक्षाविदो के अलावा उसके साधारण नागरिको का योगदान और प्रयास शामिल हो।यहीं पर सबसे बड़ी बाधा का सामना हमारे देश के आम नागरिकों को करना पड़ता है और वह बाधा है विचारो के अदान प्रधान की समस्या। जैसे कि कहां गया, भारतीय नागरिक अपने ही देश के दूसरे राज्य में जाकर अजनबी बन जाते हैं क्योंकि सम्प्रेषण का माध्यम बदल जाता है, वे अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त कर पाते हैं, ना ही अपनी बात दिल खोल कर रख पाते हैं।

अब सवाल ये है कि एक भारतीय नागरिक कितनी सारी प्रांतीय भाषा को सीखे, उनका ज्ञान हासिल करें, ऐसे में विचार आया एक सम्प्रेषण की सहज सरल भाषा की जिसका व्यवहार भारतीय नागरिक आपसी संवाद के लिए कर सकें चाहे वो जिस प्रांत या राज्य से क्यों ना हो अर्थार्थ आवश्यक्ता थी एक आसान भाषा की ।

हमारे मनीषियों ने तथा संविधान के रचयिताओ ने हिंदी से बेहतर किसी दूसरी भारतीय भाषा को नहीं पाया। हम हिंदी के राजभाषा बनने के लिए इतिहास पर चर्चा नहीं करेंगे, परंतु ये बताएंगे के बहुत सारे उतार-चढ़ाव एवं तर्क वितर्क के बाद हिंदी को राजभाषा का दर्जा भारतीय संविधान में दिया गया अर्थार्थ भारतीयों को अब अपनी एक सम्प्रेषण की भाषा मिल गई है।

चूँकि हिंदी भारत के आदिकांश राज्य में बोली और समझी जाती है और ये एक ध्वन्यात्मक भाषा है जिसके कारण इसको सिखाना भी सहज है, कहने को लोग अंग्रेजी को भी आपसी संवाद के लिए सरल कहते हैं पर अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है और भारत के गांव के कितने लोग अंग्रेजी जानते हैं आखिर।

निबन्ध का सार: एक उन्नतशील राष्ट्र के लिए उसके नागरिको के मध्य आपसी विचार विमर्श के लिए लिंक भाषा अतिआवश्यक है तभी वह देश प्रगति के पथ पर, विकास के पथ पर अग्रसर हो पाएगा। हमारे देश भारत के लिए ये वक्त की जरुरत है।

दिनांक 26-27 जून 2023 के दौरान आयोजित दो दिवसीय राजभाषा कंप्यूटर प्रशिक्षण की एक झलक। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हिंदी शिक्षण योजना से राजभाषा प्राध्यापिका श्रीमती रागिनी तिवारी आवश्यक मार्गदर्शन देती हुईं।

दिनांक 26-27 जून, 2023 के दौरान होने दो दिवसीय राजभाषा कंप्यूटर प्रशिक्षण में हिन्दी शिक्षण योजना से पधारी मुख्य अतिथि के रूप में प्राध्यापिका श्रीमती रागिनी तिवारी, भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता की सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) श्रीमती सुनीता तिवारी एवं संस्थान के कर्मचारीगण।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के संबंध में आदर्श कार्यालय की विशेषताएं

सुनीता तिवारी

भारत एक विशाल देश है। इसके हर प्रान्त की अपनी भाषा है। इस बहुभाषी देश में परस्पर संपर्क एवं समन्वय बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि देश की एक राजभाषा हो जो सभी भाषाओं में भाषा-भाषियों को एक सूत्र में आबद्ध कर एक संपर्क भाषा के दायित्व का निर्वाह कर सके। इसी संपर्क भाषा की आवश्यकता को महसूस करते हुए भारत देश में स्वतंत्रता के बाद हमारी संविधान सभा ने 14 सितम्बर सन् 1949 को यह अहम निर्णय लिया था कि हिन्दी इस देश की राजभाषा होगी और तब से ही "देवनागरी" में लिखित हिन्दी संघ की राजभाषा है।

संघ के शासकीय प्रयोजनों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग हो इसके लिए हमारे संविधान के भाग 5, 6, एवं 17 में राजभाषा हिन्दी के प्रावधान है। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 की उपधारा 4 के साथ पठित धारा 8 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारत सरकार ने नियम 1976 बनाए हैं।

संघ के प्रत्येक कार्यालय से अपेक्षा की गई है कि राजभाषा के सभी नियमों का अनुपालन सुनिश्चित हो। भारत सरकार राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए विभिन्न प्रयास कर रही है ताकि सभी सरकारी कार्यालयों में राजमाषा हिन्दी का प्रयोग सुनिश्चित हो। इस कार्य हेतु संसदीय राजभाषा समिति, मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय आदि को निरीक्षण कार्य का दायित्व सौंपा गया है। अतः प्रत्येक कार्यालय को राजभाषा हिन्दी के संबंध में आदर्श कार्यालय बनाना है तो उसे निम्नलिखित प्रयास करने होंगे ताकि राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में वह एक आदर्श कार्यालय के रूप में सिद्ध हो सके:-

1. कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन हो तथा उसकी नियमित तिमाही बैठकों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से भरकर मंत्रालय/मुख्यालय (जैसी भी स्थिति हो) को भेजा जाना चाहिए तथा उसकी एक प्रति राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यालय को भेजी जानी चाहिए।
3. कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाना चाहिए तथा हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों की कार्यशालाओं में सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
4. कार्यालय राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) में अधिसूचित होना चाहिए।
5. कार्यालय में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा नियम 8(4) के तहत अपना अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में निष्पादित करने के लिए व्यक्तिशः आदेश दिए जाने चाहिए तथा इसी नियम के तहत कार्यालय में कुल अनुभागों में से निर्धारित लक्ष्य के अनुसार अनुभागों को अपना निष्पादित कार्य राजभाषा हिन्दी में करने के लिए विनिर्दिष्ट किया जाना चाहिए।
6. वर्ष में एक बार हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया जाना चाहिए। इन हिन्दी संगोष्ठियों के आयोजन से एक हिन्दीमय वातावरण सृजित होता है और राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए अधिकारी/कर्मचारी प्रोत्साहित होते हैं। कार्यालय में प्रत्येक वर्ष निर्धारित सीमा के अनुसार हिन्दी पुस्तकों की खरीद भी की जानी चाहिए।
7. प्रत्येक कार्यालय को हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन करना चाहिए। पत्रिका से अधिकारियों/कर्मचारियों की लेखनीय प्रतिबद्धता में वृद्धि होती है और वे हिन्दी प्रयोग के प्रति प्रोत्साहित होते हैं।
8. प्रत्येक कार्यालय के प्रधान को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में स्वयं भाग लेना चाहिए तथा अपने सहयोग के लिए राजभाषा अधिकारी को साथ में ले जाना चाहिए।
9. कार्यालय में राजभाषा हिन्दी से संबंधित राजभाषा विभाग द्वारा लागू हिन्दी प्रोत्साहन योजना को लागू किया जाना चाहिए और उसमें सफल कार्मिकों को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार देना चाहिए।
10. हिन्दी अनुभाग में हिन्दी अधिकारी के पास अपेक्षित संसाधन कम्प्यूटर, फोटोकॉपियर मशीन, टेलिफोन आदि होने चाहिए ताकि हिन्दी कार्य निष्पादन में ये सहायक सिद्ध हो सकें।
11. राजभाषा नियम 1976 के नियम 11 के तहत सभी नामपट्ट, सूचनापट्ट, रबड़ स्टाम्प आदि द्विभाषी/त्रिभाषी होने चाहिए।
12. कार्यालय में कार्यरत हिन्दी अधिकारी को अपने अधीनस्थ अनुभागों का राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार राजभाषा संबंधी निरीक्षण करना चाहिए।
13. कार्यालय के सभी कम्प्यूटरों में यूनीकोड की व्यवस्था होनी चाहिए तथा सभी कम्प्यूटरों को हिन्दी में कार्य करने के लिए इनेबल करना चाहिए।
14. कार्यालय में सभी प्रपत्र, मुद्रित फार्म द्विभाषी होने चाहिए। समय समय पर इनका प्रयोग भी द्विभाषी में सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
15. राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा के संबंध में समय-समय पर जारी आदेशों का शत-प्रतिशत अनुपालन विभाग द्वारा सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
16. कार्यालय में राजभाषा अधिकारी और कार्यालय अध्यक्ष में परस्पर समन्वय और विश्वास होना चाहिए। कार्यालय अध्यक्ष और हिन्दी अधिकारी राजभाषा रूपी रथ के दो पहिए हैं। इनमें जितना समन्वय होगा, राजभाषा रूपी रथ उतना ही गतिमान होगा। असमन्वय की स्थिति में राजभाषा रूपी रथ गतिमान हो ही नहीं सकता।

दिनांक 10 जनवरी 2023 में संस्थान में कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस सुनहरे अवसर पर संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक चन्द्रा थे एवं इसके अलावा सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) श्रीमती सुनीता तिवारी भी उपस्थित थी। हिन्दी शिक्षण योजना से माननीय अतिथि एवं बाहरी विशेषज्ञ के रूप में उपनिदेशक (पूर्व) डॉ. सुनील कुमार लोका व्याख्यान देते हुये।

मुक्तिबोध

सुनील कुमार श्रीवास्तव

‘‘ओ मेरे आदर्शवादी तन-मन,
ओ मेरे सिद्धांतवादीजीवन,
अब तक क्या तूने किया?
जीवन क्या तूने अपना जिया !!’’

‘‘समस्या एक नहीं, अनेकों हैं,
मेरे सभ्य नगरों, शहरों और ग्रामों में,
सभी मानव सुखी, सुंदर व शोषण-मुक्त रहे,
यह कब होंगे जीवन में?’’

चिड़िया की तरह चहचहाओ मन,
अपने उपवन जीवन में,
इमारतों के चारों ओर बेड़ियाँ डालकर,
दफ़ा 302 के तहत सज़ा-ए-मौत
उड़ने की चाह सबसे सच्ची चाह है, जीवन में।

दिनांक 28 अगस्त, 2023 को भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता के टाटा हॉल में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला बड़े हर्षोल्लास के साथ संपन्न किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-2 के पूर्व सचिव एवं सी.जी.सी.आर.आई. के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) से सेवानिवृत्त एवं भारतीय विद्या मंदिर, कोलकाता में सलाहकार के पद पर कार्यरत माननीय अतिथि एवं बाह्य विशेषज्ञ श्री प्रियंकर पालीवाल व्याख्यान देते हुए। सभा में उपस्थित समस्त कर्मचारीगण राजभाषा कार्यशाला का लाभ उठाते हुए।

पिता

संघमित्रा रॉय चौधरी

पिता की थैली थी, या था कोई जादूगर का पिटारा ! ।
जिससे निकल आता था, मेरी जरूरत का सामान सारा ।।

मेहनत करते, दिनभर थकते, अपनी नींद करते निछावर ।
मेरा स्वप्न पूरा करने को, बने फिरते थे यायावर ।।

सबकी जिम्मेदारी संभालते, कंधे उनके थे मजबूत बड़े ।
धुप - बारिश से हमें बचाते, ढ़ाल बनकर रहते थे अड़े ।।

पिता के होने से थी रात के, अंधेरे में भी अपार धीरज ।
मैं थी एक नन्ही-सी तारा, मेरे पिता थे मेरे सूरज ।।

जीवन की कड़ी दोपहर में, पिता थे ठंडी छाँव ।
पिता बिन आश्रयहीन है दुनिया, पिता थे मेरे सुंदर ठाँव ।।

पिता का प्रेम अमृत सा, पिता का आलिंगन था सुखदायक ।
लाड़ली थी मैं अपने पिता की, मेरे पिता हैं मेरे नायक ।।

जुलाई - नवम्बर 2022 सत्र के परीक्षा सम्बंधित प्रशिक्षण

प्रवीण परीक्षा हेतु

1. श्री सुब्रत दत्ता (प्रशासनिक अधिकारी, दाखिला कार्यालय)
2. श्री मलय पाकड़े (कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक)
3. श्री संभु राम (प्रधान रसोइया)
4. श्री सुर्यांशु दत्ता (कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक)

पारंगत परीक्षा हेतु

1. श्री महेश पटनायक (सहायक अभियंता, सिविल)
2. श्रीमती संध्या खाड़ा (वरिष्ठ सहायक)
3. श्रीमती मानसी सान्याल (सचिवीय सहायक)
4. श्री सैकत बरुआ (वरिष्ठ लेखाकार)
5. श्रीमती सुचंद्रा बोस (सहायक प्रबन्धक, शैक्षिक)

प्राज्ञ परीक्षा हेतु

1. श्रीमती सुशीला राय (परिचारिका)
2. श्री बिनोद चंद्र सोरेन (कार्यालय सहायक)

राजभाषा पखवाड़ा 2022 के प्रतियोगिताओं के परिणाम

काव्य-आवृति प्रतियोगिता

1. श्रीमती प्रदीप्ता रॉय, कार्यक्रम कार्यकारी
2. श्रीमती सुचंद्रा बोस, सहायक प्रबंधक (शैक्षिक)
3. श्री सत्य नारायण घोष, सुरक्षा अधिकारी

निबंध लेखन प्रतियोगिता

1. सुश्री पुजा साहा, मानव संसाधन कार्यकारी
2. श्रीमती स्वरूपा गुप्ता घांटी, टेलीफोन ऑपरेटर
3. श्री मनीष कुमार सिंघा, डिजिटल परिवर्तन अधिकारी

हिंदी टिप्पण एवं आलेख प्रतियोगिता

1. श्रीमती प्रदीप्ता रॉय, कार्यक्रम कार्यकारी
2. श्रीमती मानसी सान्याल, सचिवीय सहायक
3. सुश्री अनिंदिता रुद्र, प्रबंधक (एम.बी.ए.ई.एक्स.)

अनुवाद प्रतियोगिता

1. श्रीमती सुचंद्रा बोस, सहायक प्रबंधक (शैक्षिक)
2. श्री सत्य नारायण घोष, सुरक्षा अधिकारी
3. श्रीमती संघमित्रा रॉय चौधरी, कार्यक्रम कार्यकारी (एम.बी.ए.ई.एक्स.)

सुलेख प्रतियोगिता

1. श्रीमती सुचंद्रा बोस, सहायक प्रबंधक (शैक्षिक)
2. श्रीमती मधुश्री देबनाथ, कार्यक्रम कार्यकारी (एम.बी.ए.ई.एक्स.)
3. श्रीमती स्वरूपा गुप्ता घांटी, टेलीफोन ऑपरेटर

आशुभाषण प्रतियोगिता

1. श्रीमती मधुश्री देबनाथ, कार्यक्रम कार्यकारी (एम.बी.ए.ई.एक्स.)
2. सुश्री श्रीपर्णा दास, लेखा कार्यकारी
3. श्री चिरंजीब चटर्जी, सहायक अभियंता

सांत्वना पुरस्कार

1. श्री महेश पटनायक, सहायक अभियंता
2. श्रीमती सुशीला राय, परिचारक
3. श्रीमती देबयानी नियोगी, सामान्य सहायक
4. श्रीमती दीपा दास, सामान्य सहायक
5. सुश्री तानिया गांगुली, कार्यक्रम कार्यकारी (एल.डी.पी. कार्यालय)
6. श्रीमती दीपिका चक्रबर्ती, सचिव (निदेशक)
7. श्री सूर्यांशु दत्ता, कनिष्ठ कार्यालय अधीक्षक
8. श्री अर्घ्य पालचौधुरी, सहायक अभियंता
9. श्रीमती अनीता वी एंथनी, टेलीफोन ऑपरेटर

सलाहकार समिति – "सृजन"

बाएं से दाएं श्री जुल्फकार हसन, श्री आलोक गुइन, डॉ. नारायण चंद्र घोष, श्री विजय सिंह विराट, श्री शिलादित्य सेनबराट, श्रीमती सुनीता तिवारी

भारतीय प्रबंध संस्थान कलकत्ता

डायमंड हार्बर रोड, कोलकाता - 700104

दूरभाष: +91 33 7121 1000